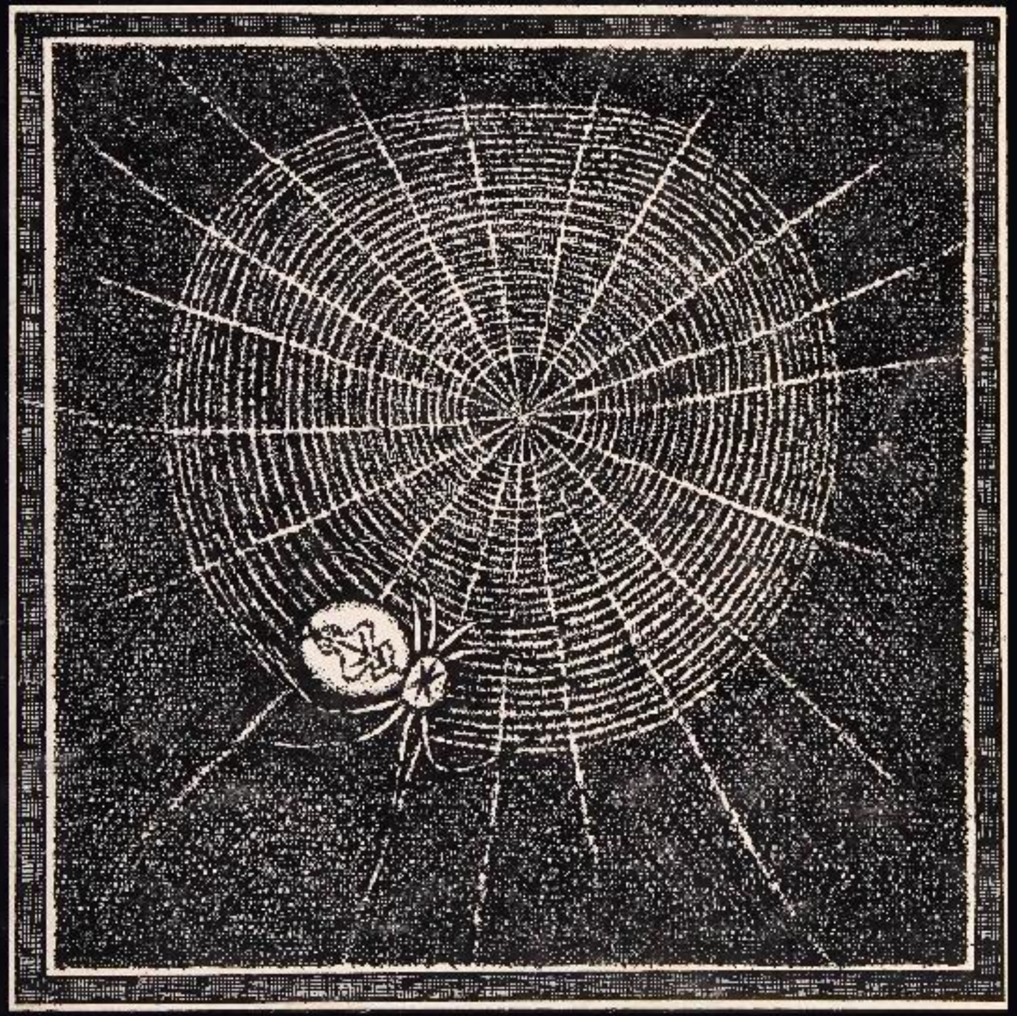
अरानिया

एक मकड़ी की कहानी



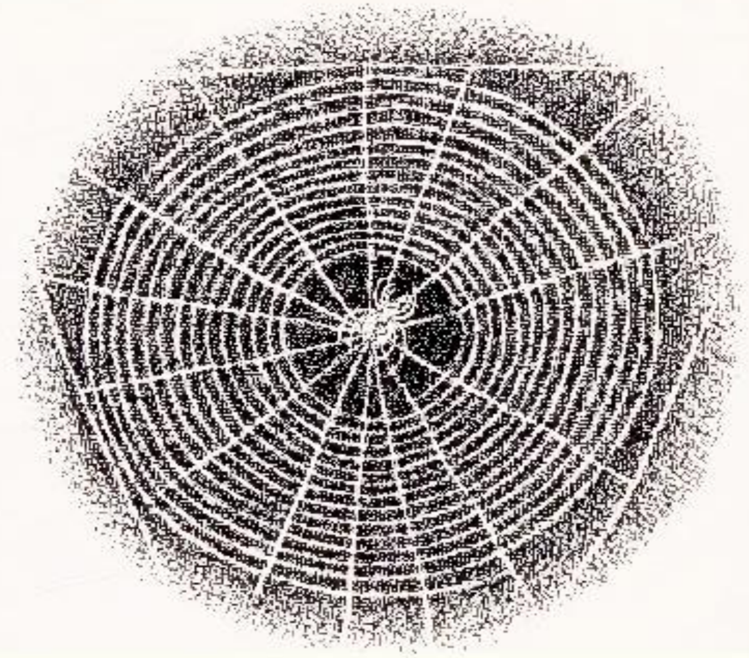
जेनी वागनेर

हिंदी: आरती जैन

अरानिया एक मकड़ी है। यह कहानी उसकी दुनिया के बारे में है। इसमें हम उसके धैर्य और जीवन के लिए किए गए संघर्ष को देखते हैं। अरानिया का लगातार होने वाला संघर्ष अपनी सुरक्षा के लिए, एक नाटकीय रूप लेता है, जो की सबके हृदय को छू लेगा, उनका भी जो मकड़ियों को पसंद नहीं करते।

अरानिया

एक मकड़ी की कहानी

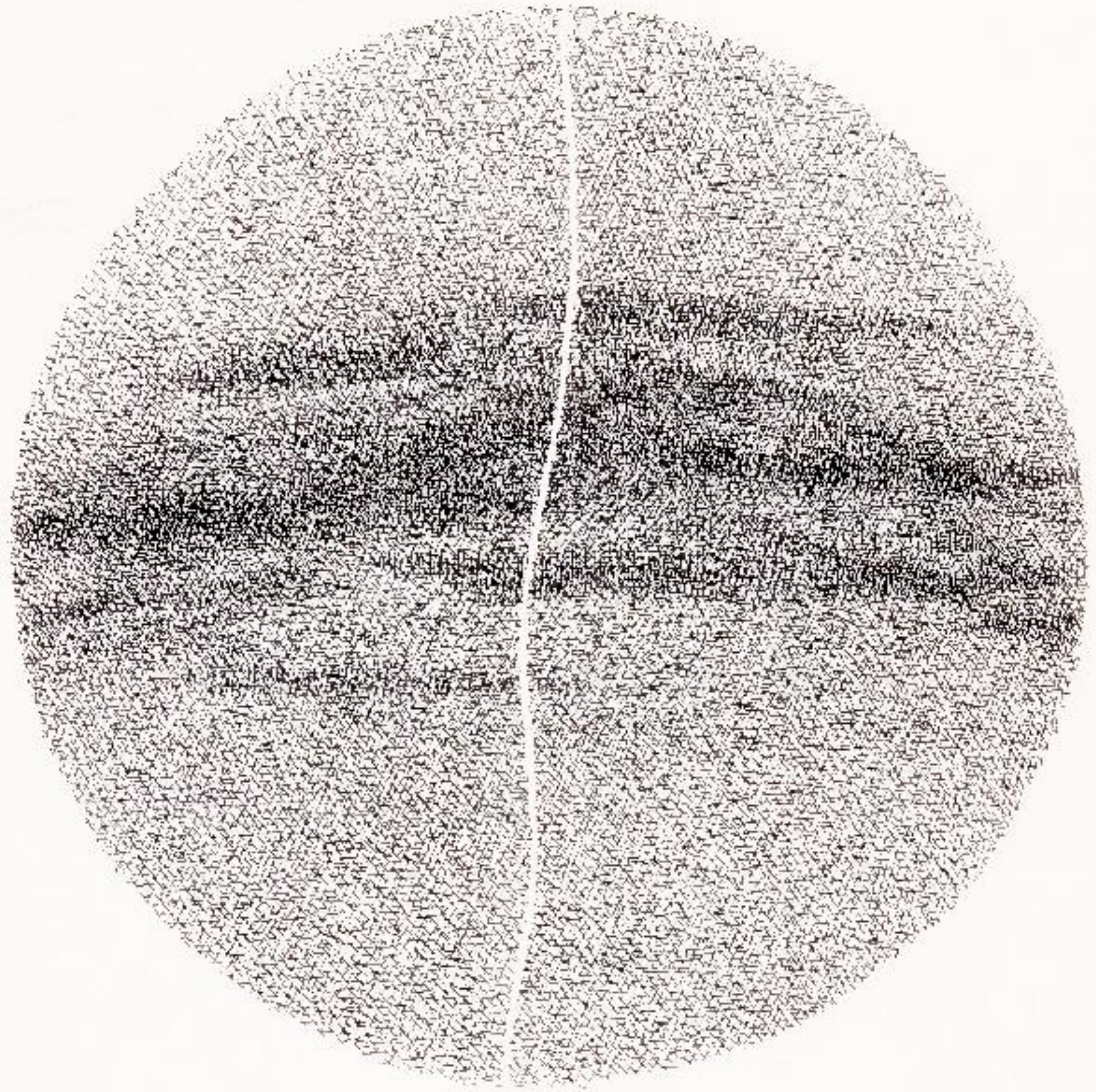


जेनी वागनेर

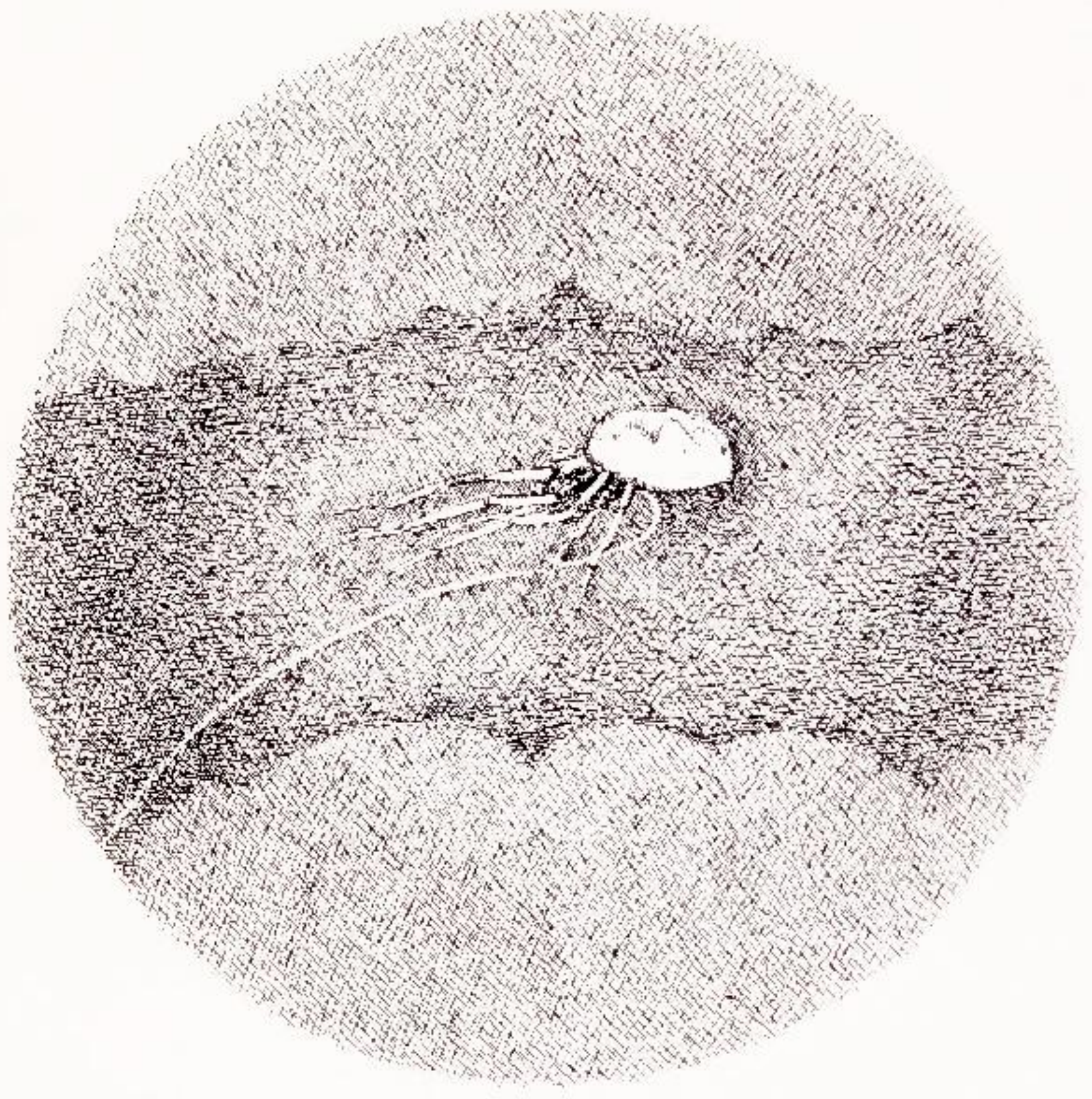
हिंदी: आरती जैन



अरानिया हवा में खड़ी होकर धागा बुन रही थी —
वो लगातार बुनती जा रही थी।

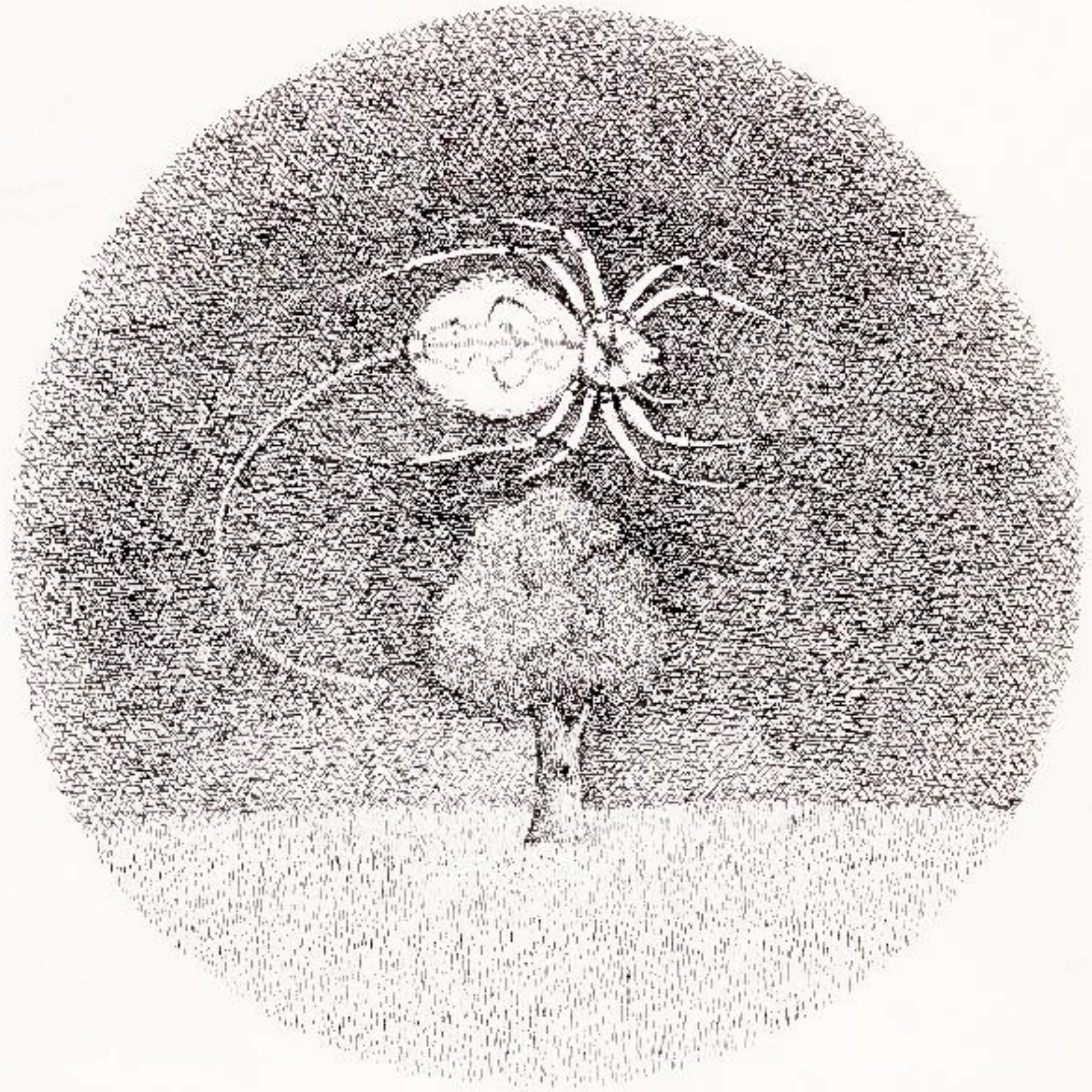


उसने एक बहुत बारीक रेशमी धागा
हवा में ऊपर उठा और वो वहीं लटक गया।



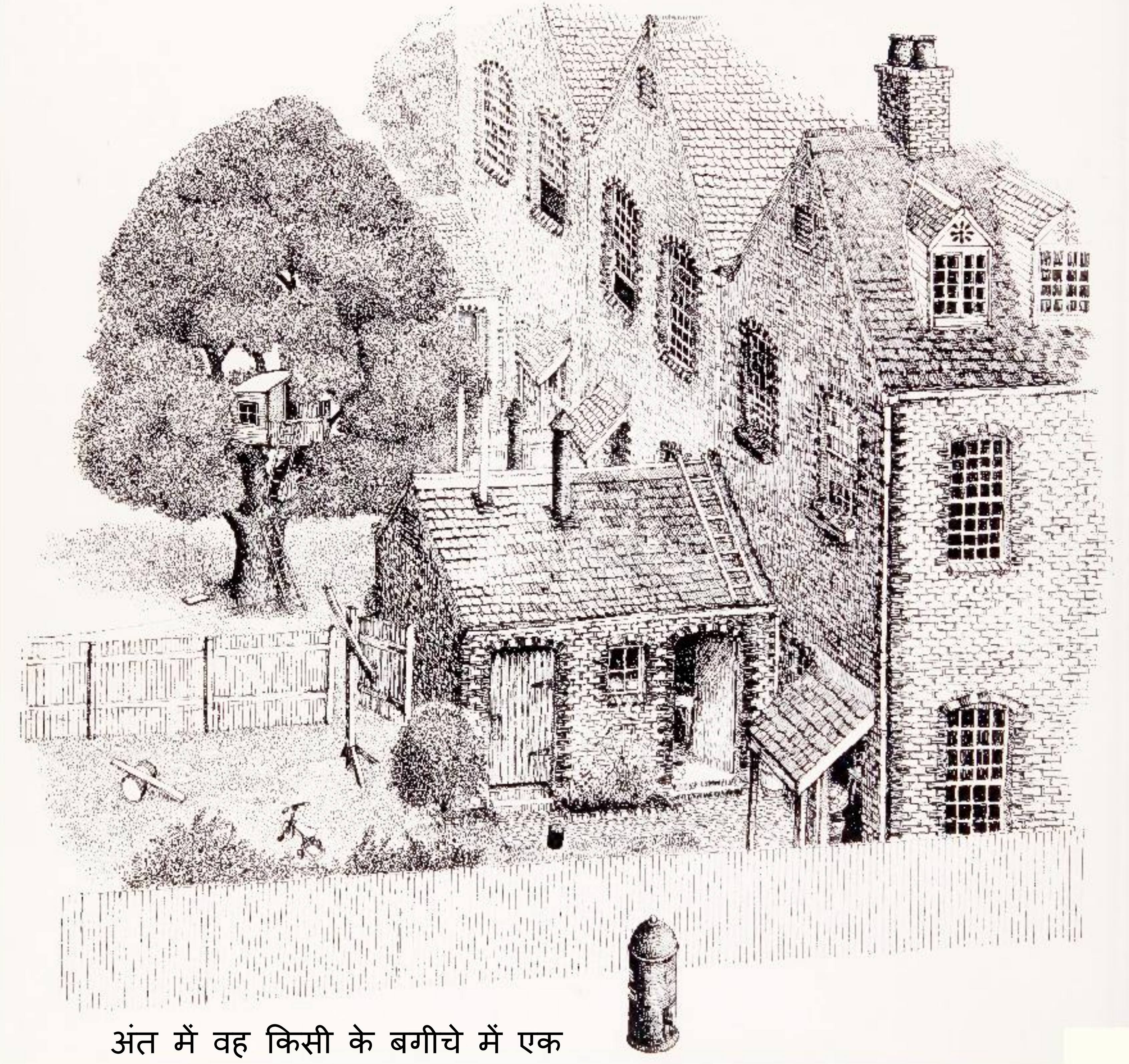
हवा ने उस धागे को ऊपर उठा लिया।

अरानिया उससे चिपक गई और हवा के साथ उड़ चली।



पूरे दिन वह हवा में झूलती रही।

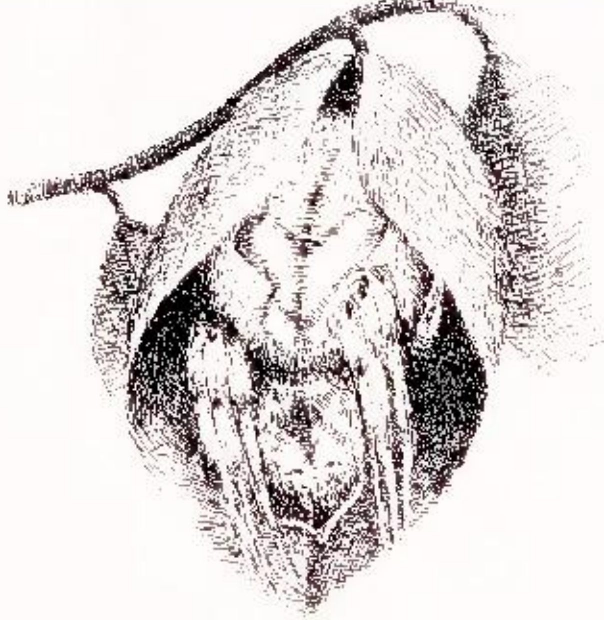
हवा जहाँ ले जाती, वह वहीं चली जाती।



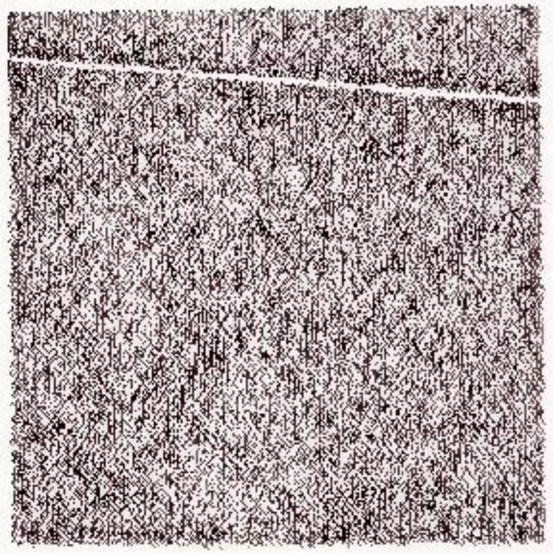
अंत में वह किसी के बगीचे में एक
बॉगनवालिया की झाड़ी पर उतर आई।

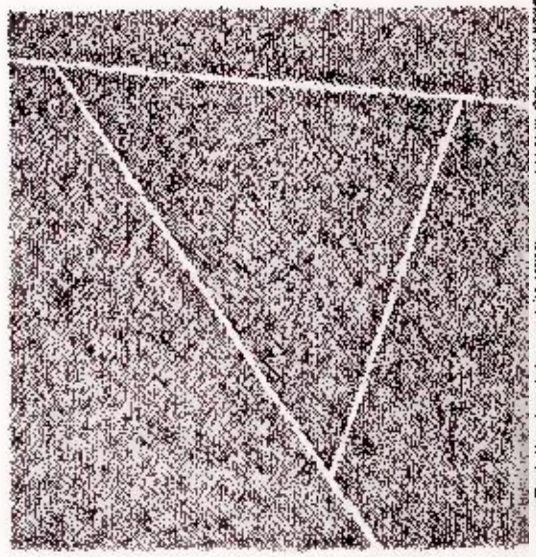


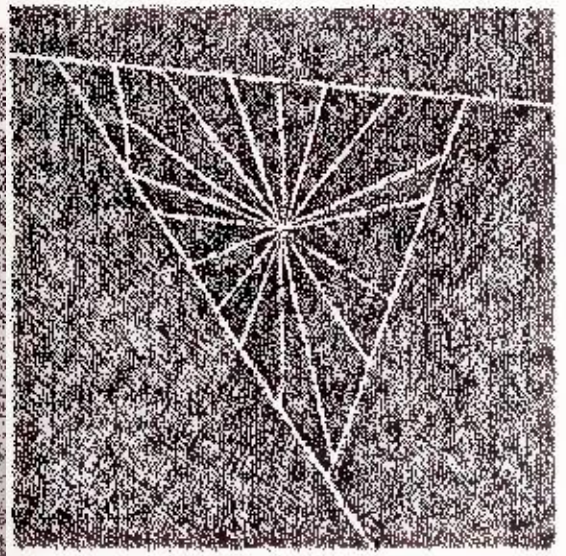
वह एक पत्ते की मोड़ में घुस गई और वहाँ अपने लिए एक सुरक्षित
जगह बना ली। फिर वह चुपचाप इंतज़ार करने लगी।

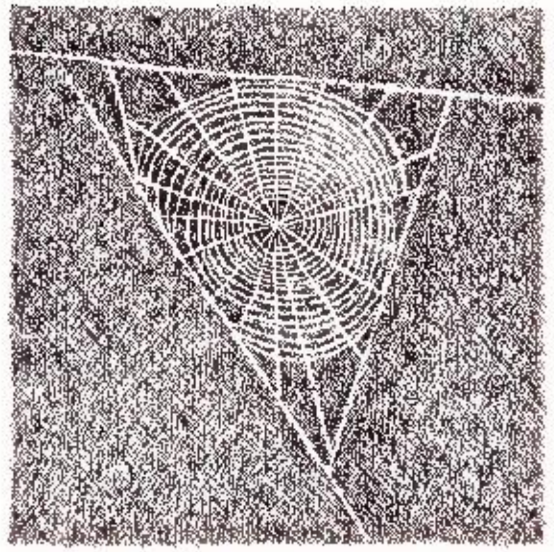


शाम होते ही वह बाहर निकली और
अपना पहला जाला बनाने लगी।

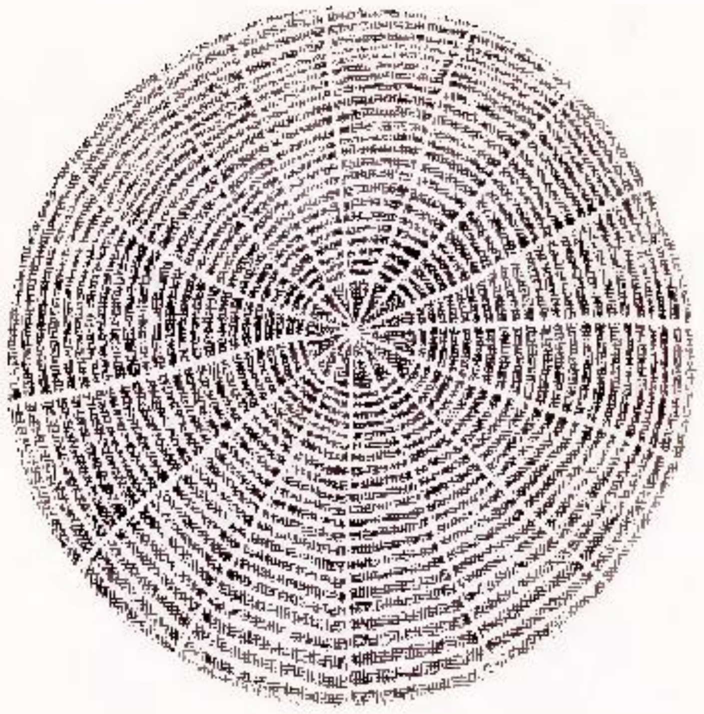






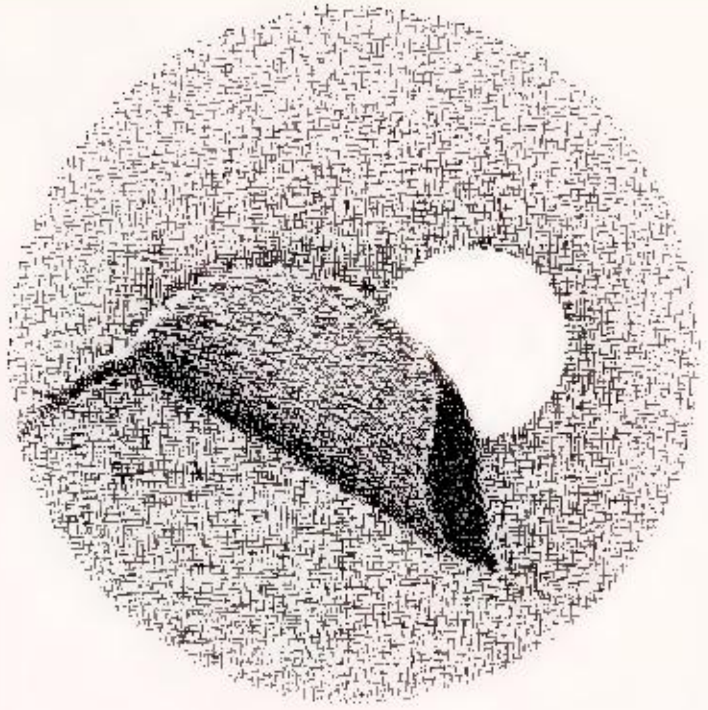


पहले उसने बीच का क्रॉस बनाया, फिर ढांचा बनाया, फिर गोल-गोल चक्कर लगाकर गोल जाला बुना।



सुबह जाला वहीं था, लेकिन थोड़ी देर के लिए ही।

लोगों के बाहर आने से पहले अरानिया ने उसे तोड़ दिया।



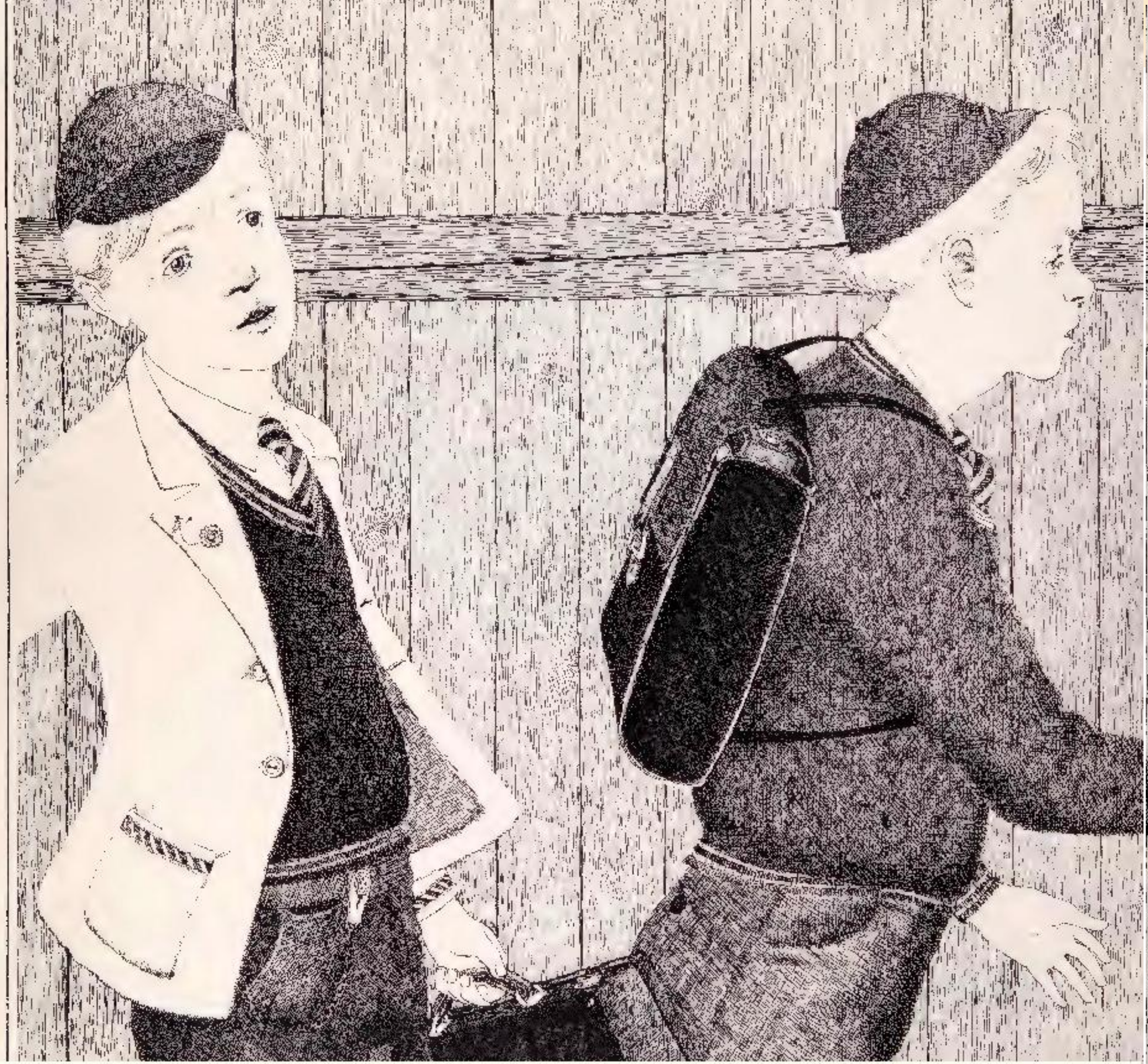
फिर वह पत्ते की मोड़ में छिप गई और शाम होने का इंतज़ार करने लगी।

कई शांत गर्मियों के दिनों और रातों तक अरानिया जाला बुनती

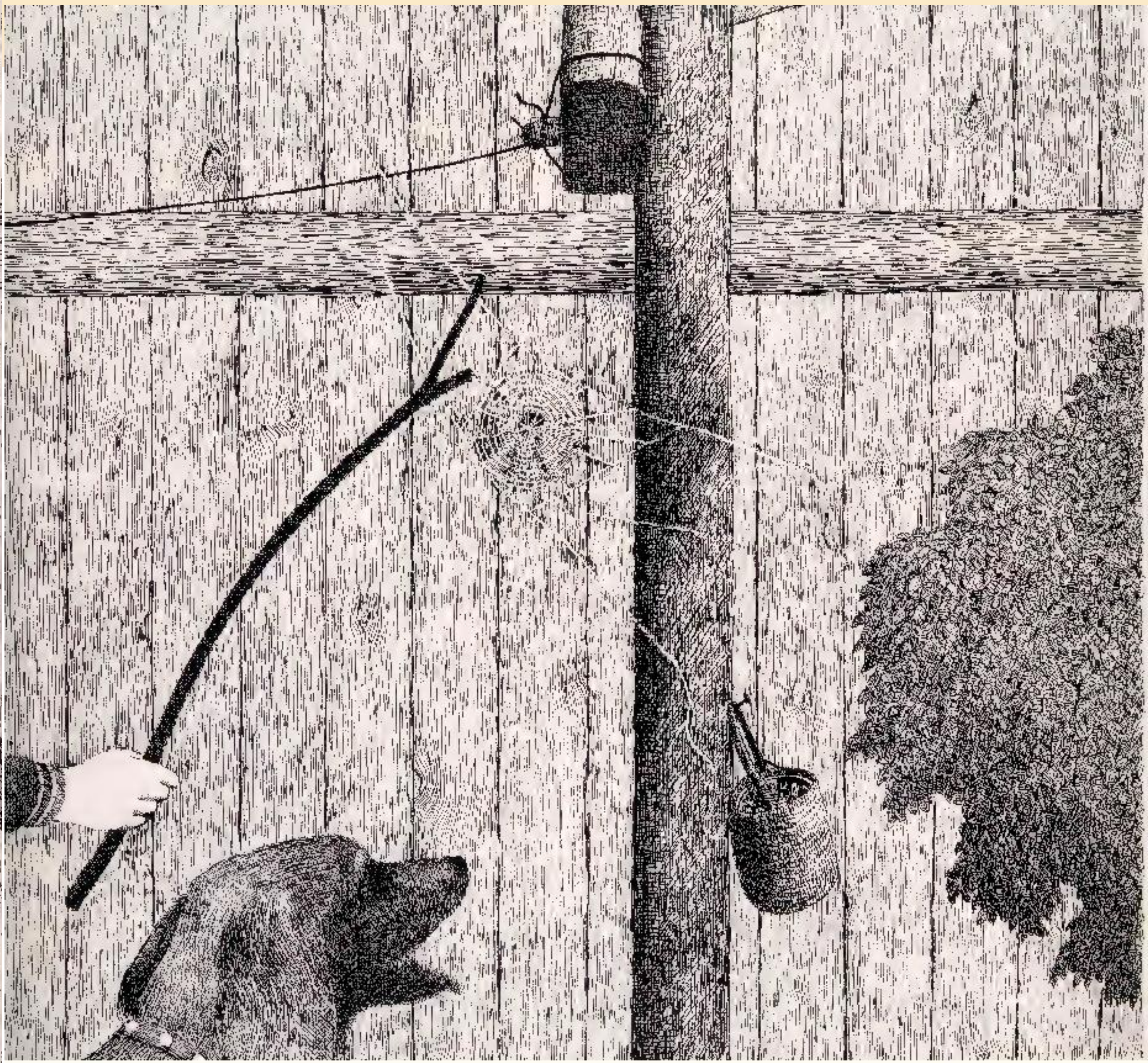
और फिर उसे तोड़ देती

कोई उसे देख तक नहीं पाया।

किसी को यह भी पता नहीं चला कि वह वहाँ रहती है।



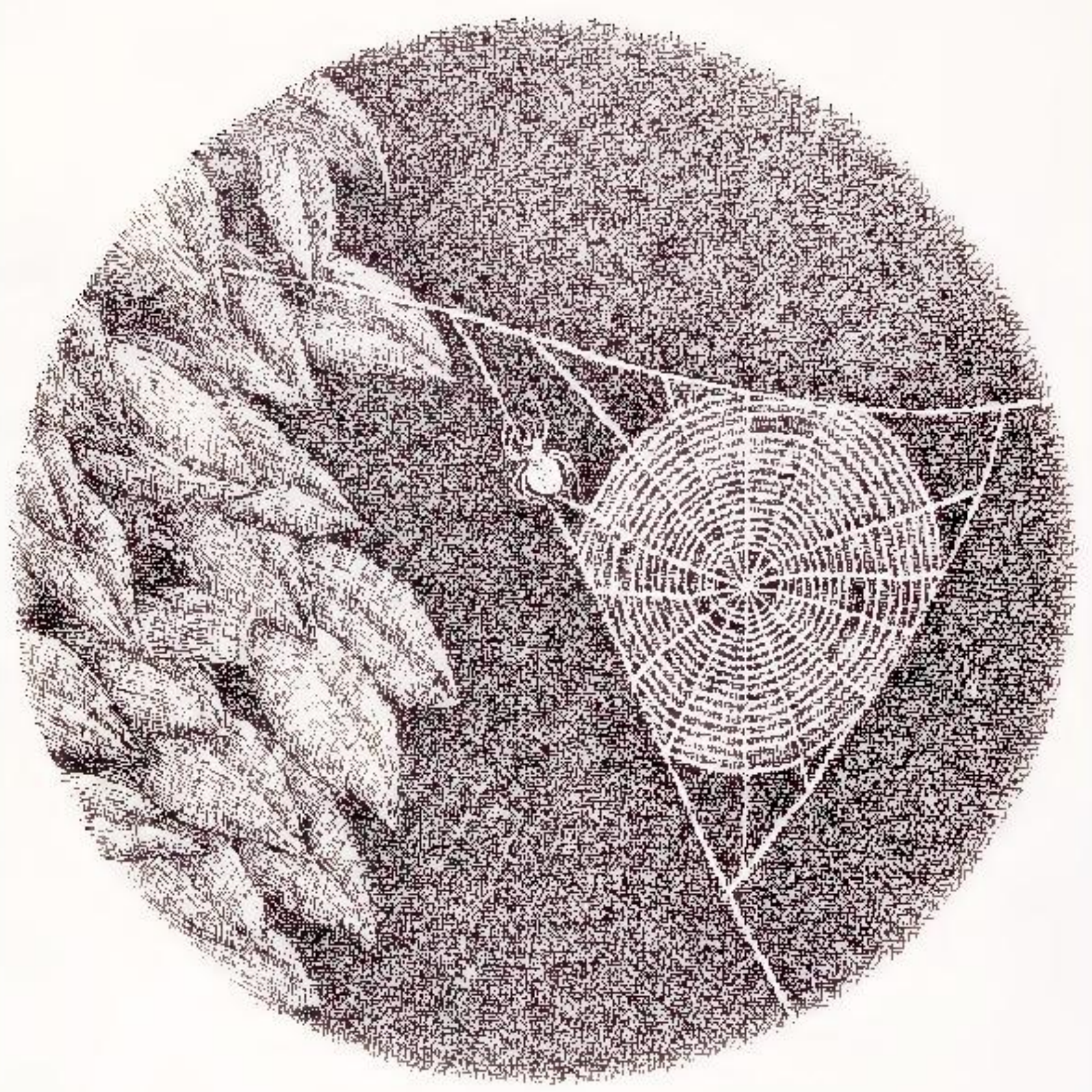
कभी-कभी जब बच्चे सुबह जल्दी बाहर आते, तो वे जाला देखते।



वे जाले को डंडी से तोड़ देते।



कभी उनकी माँ कपड़े सुखाते समय जाले को देखती और कहती, ‘अरे बाप रे! मकड़ी का जाला!’



लेकिन किसी ने भी अरानिया को नहीं देखा।

फिर गर्मियों के अंत में एक रात आई।

उस रात अरानिया को लगा कि कुछ ठीक नहीं है।

जाले का धागा ठीक से नहीं पकड़ रहा था।

हवा भारी और गीली थी।

उसने कई बार कोशिश की, लेकिन धागा ऊपर नहीं उठ रहा था।

जैसे-तैसे उसने जाला बनाया, लेकिन वह पूरा सही नहीं था।

वह पत्ते में सिमट गई और इंतज़ार करने लगी।

आसमान काला हो गया। न तारे दिखे, न चाँद।

सब कुछ बहुत शांत था।

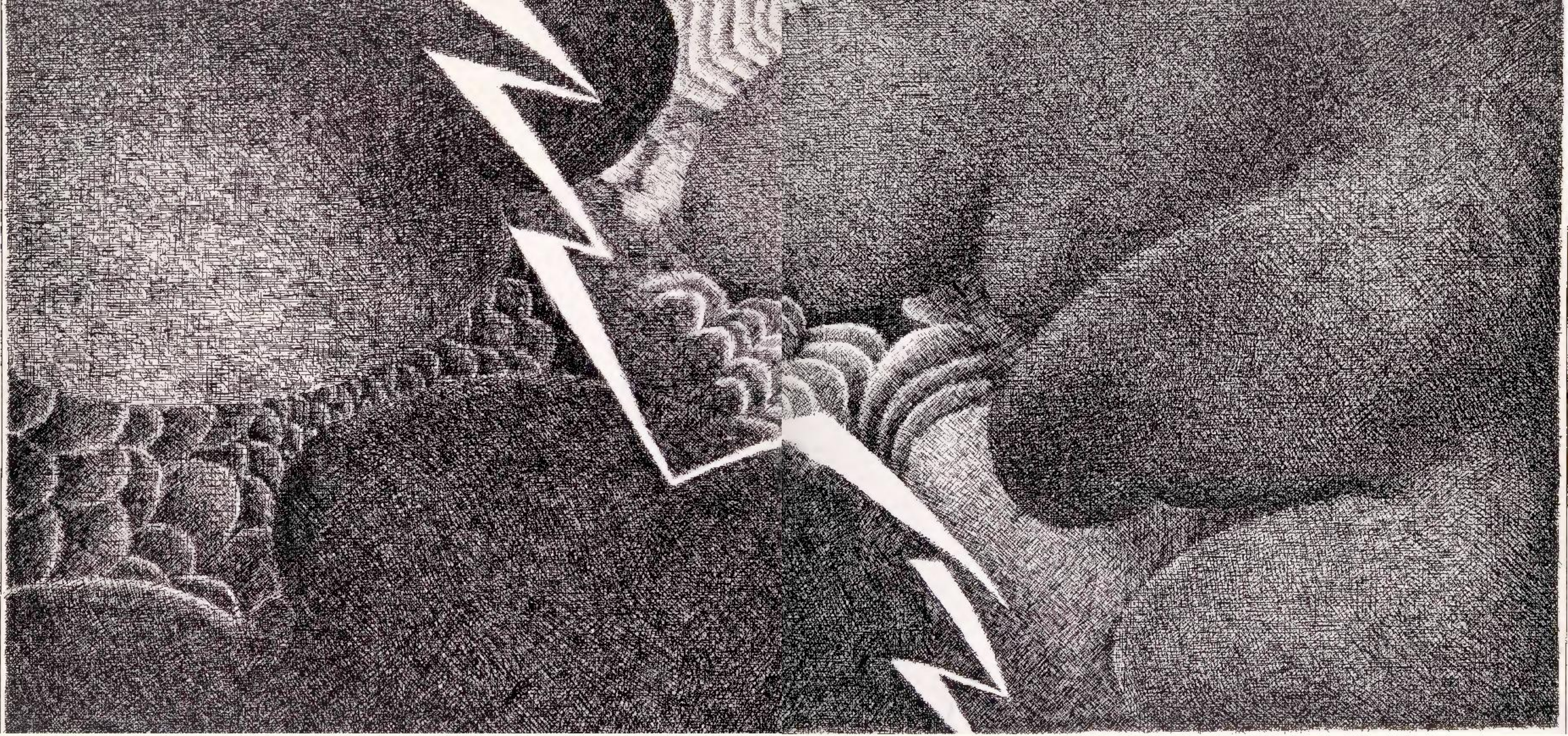
फिर हवा तेज़ चलने लगी।

जाले का एक हिस्सा टूट गया।

अरानिया ने उसे ठीक करने की कोशिश की,

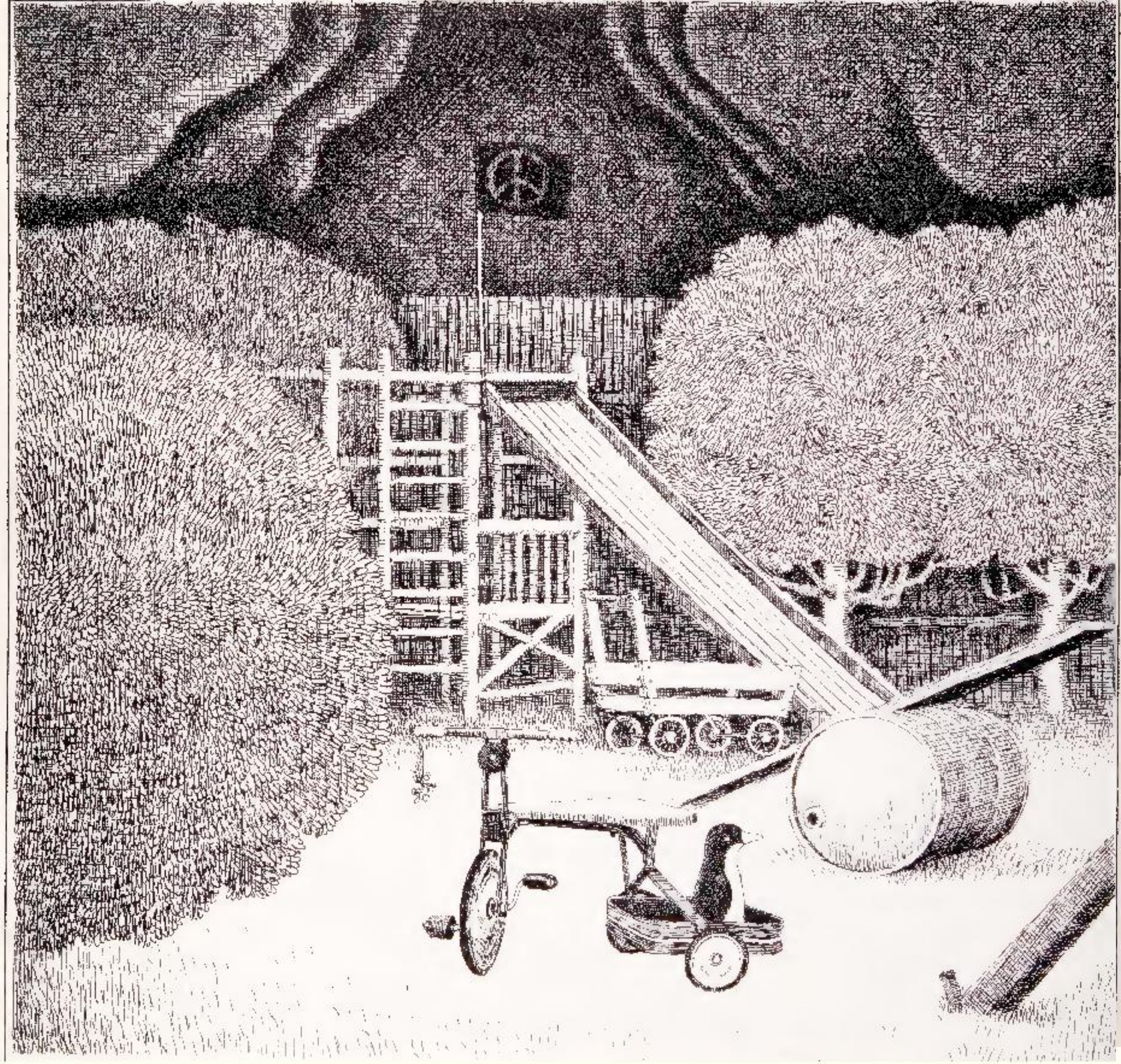
लेकिन हवा ने जाला उड़ा दिया।

झाड़ी हिलने लगी और पेड़ों से आवाज़ आने लगी।

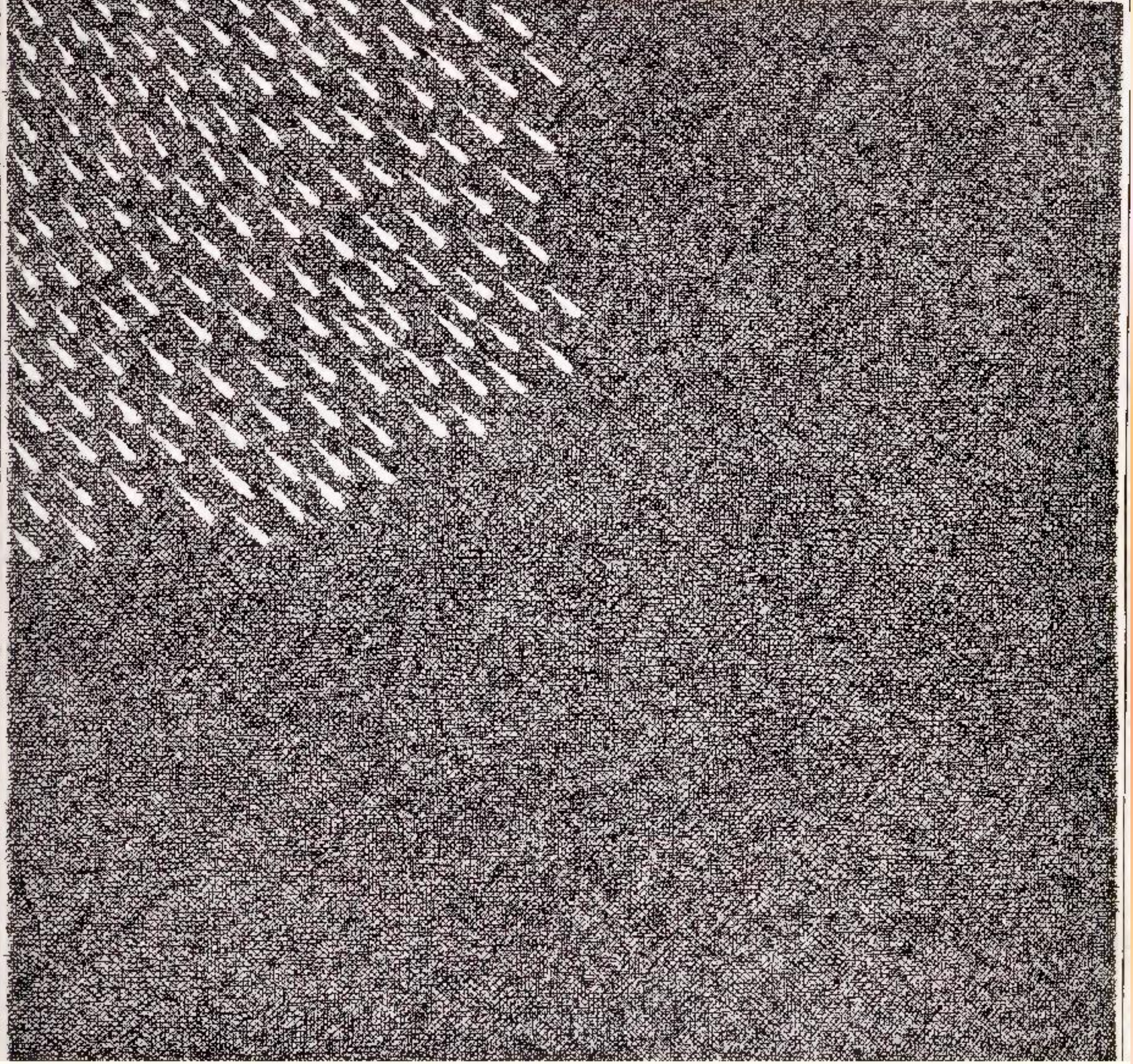


तभी अचानक जैसे आसमान फट गया।

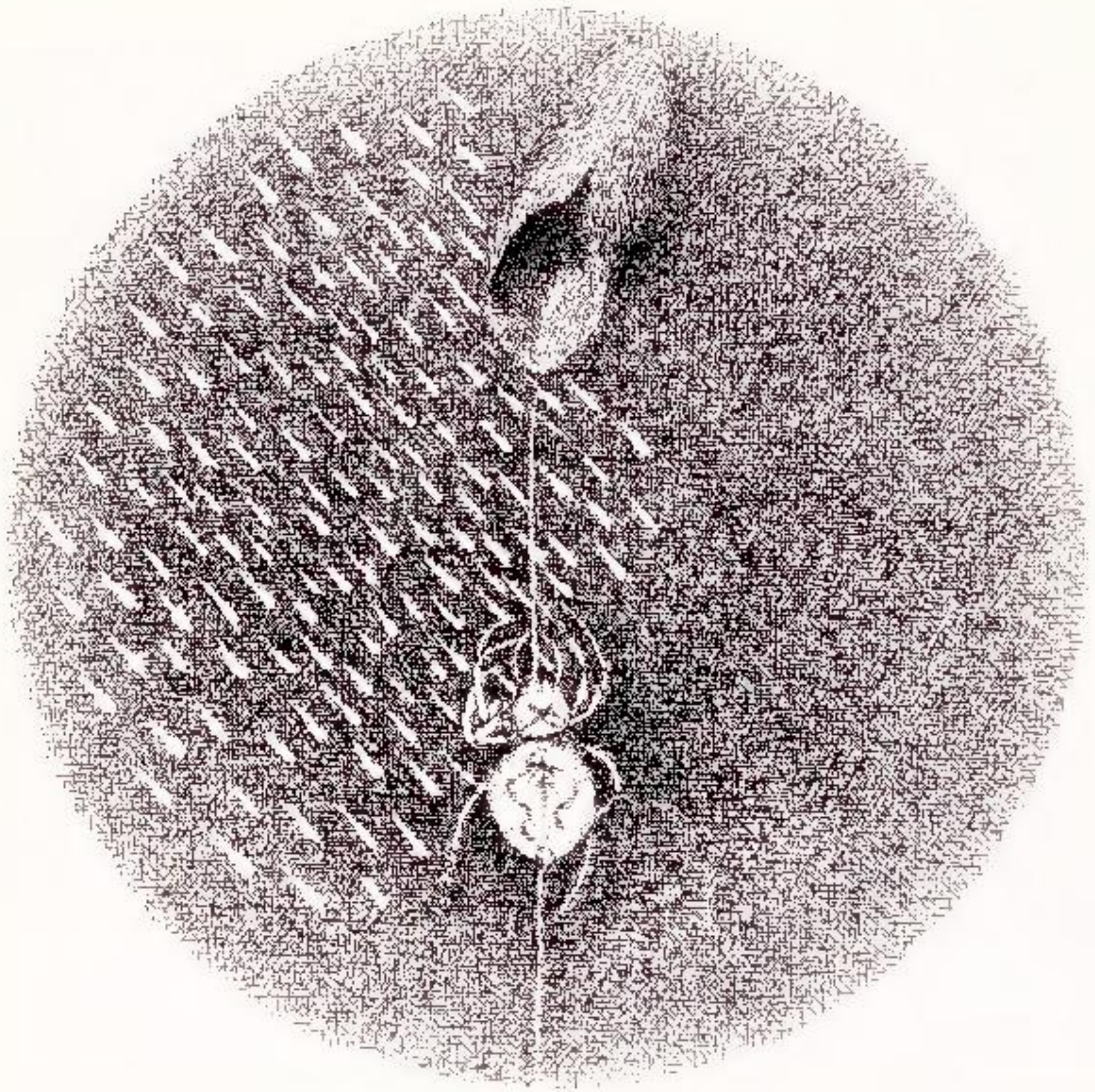
जैसे ऊपर से नीचे तक किसी ने दीवार पर एक संतरा मार दिया हो।



अचानक तेज़ बिजली चमकी और पूरे बगीचे में दिन जैसा उजला हो गया।

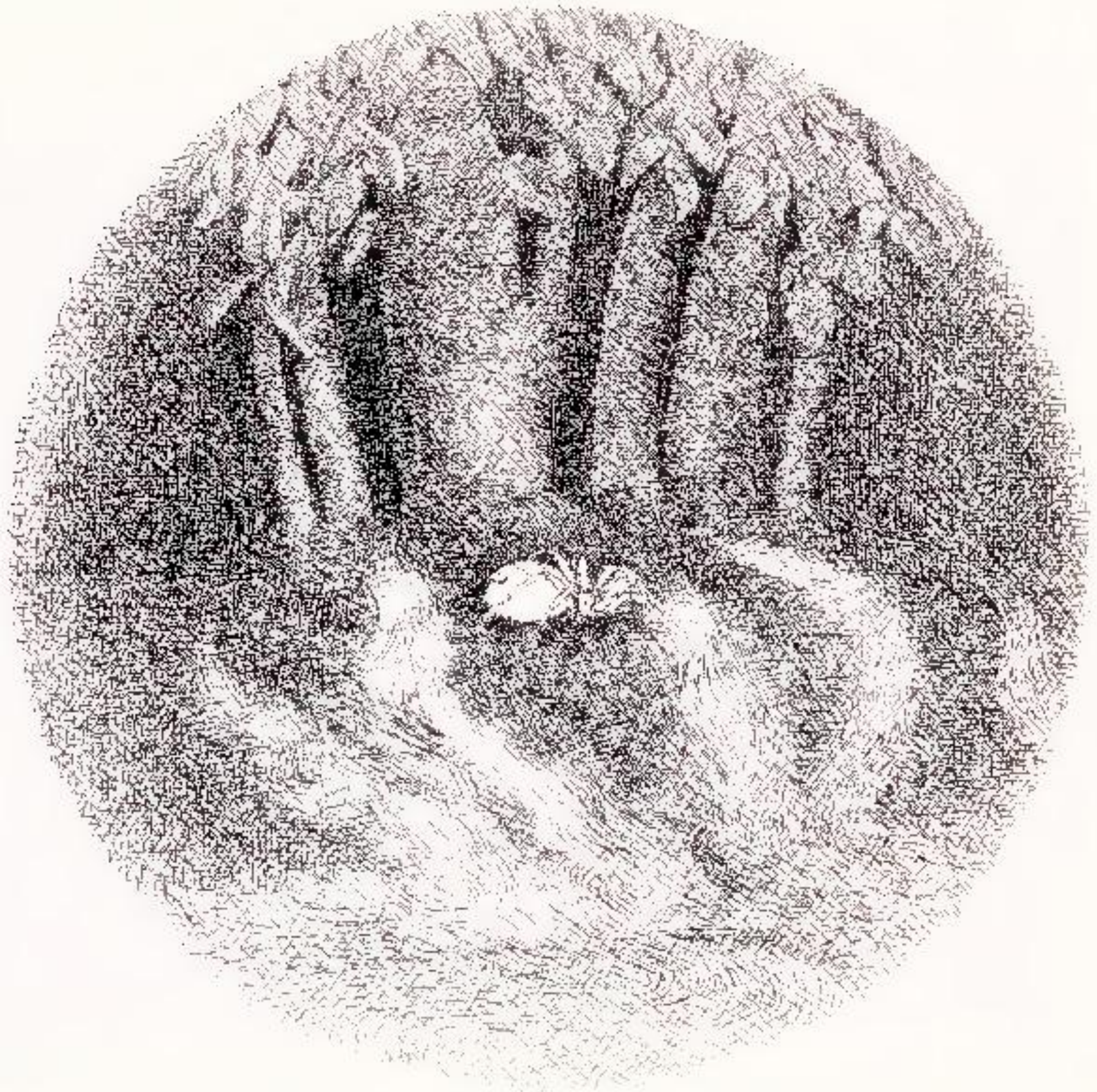


फिर ज़ोरदार बारिश शुरू हुई।



अरानिया एक पत्ते की ओर दौड़ी, लेकिन बारिश ने उसका रास्ता रोक दिया।

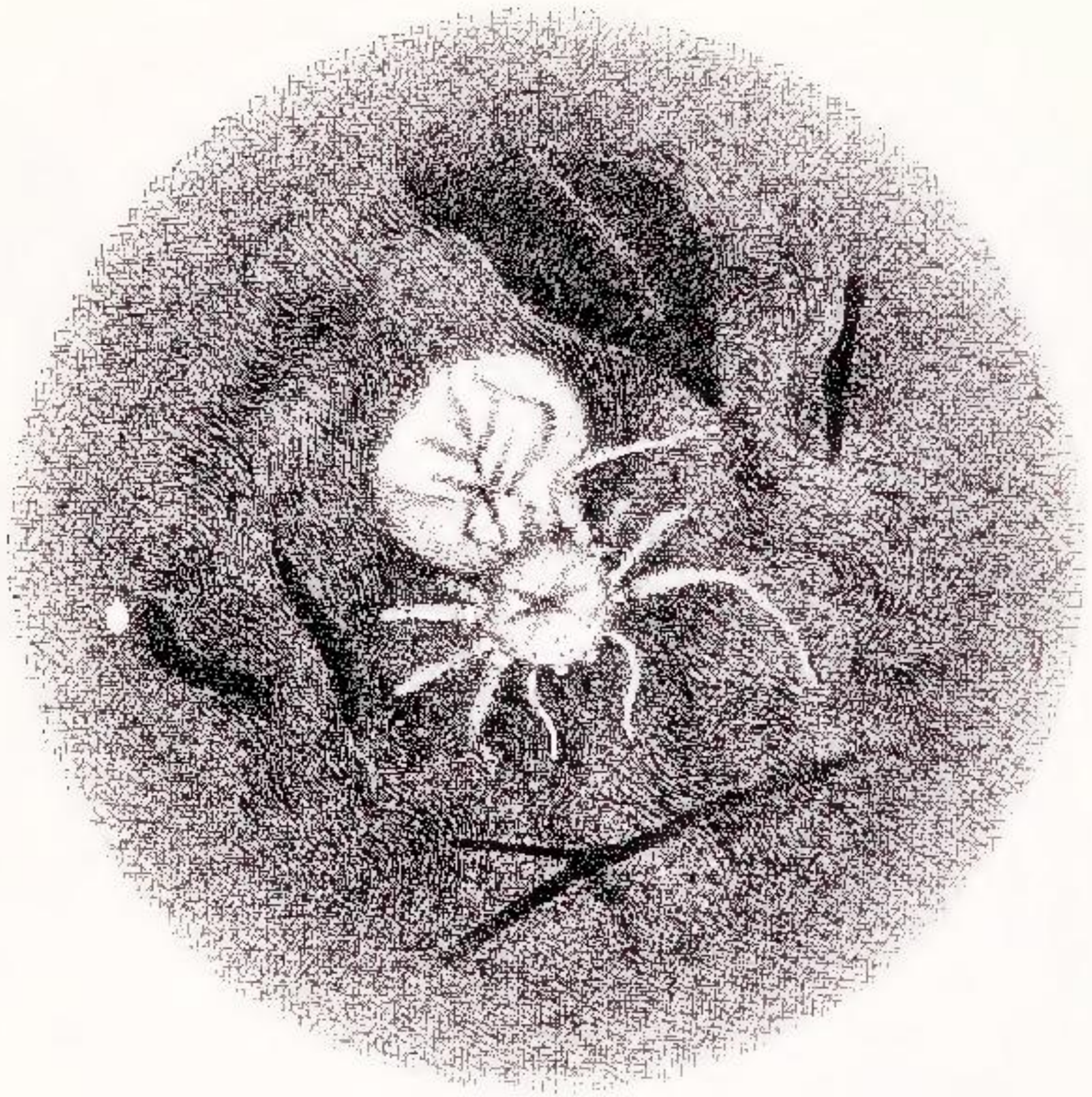
पानी तेज़ी से गिर रहा था और वह बार-बार गिर रही थी।



वह ज़मीन पर गिर पड़ी और झाड़ी के नीचे चली गई।

लेकिन वहाँ भी पानी बह रहा था।

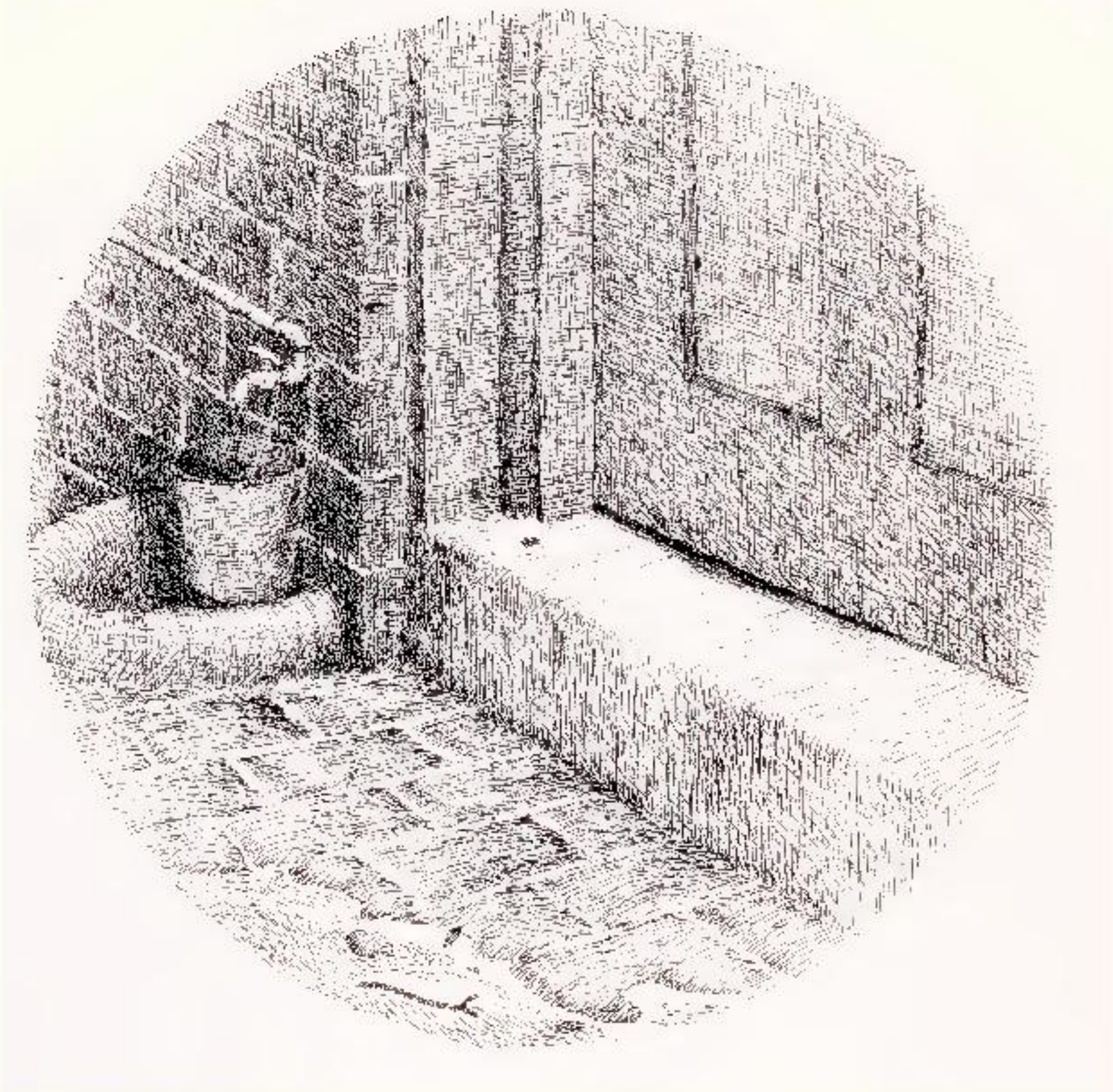
वह अपने धागे से ऊपर चढ़ने लगी, लेकिन तेज़ पानी उसे बहा ले गया।



पानी में लकड़ियाँ, घास और पत्ते बह रहे थे।

अरानिया ने सबको पकड़ने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी मददगार नहीं था।

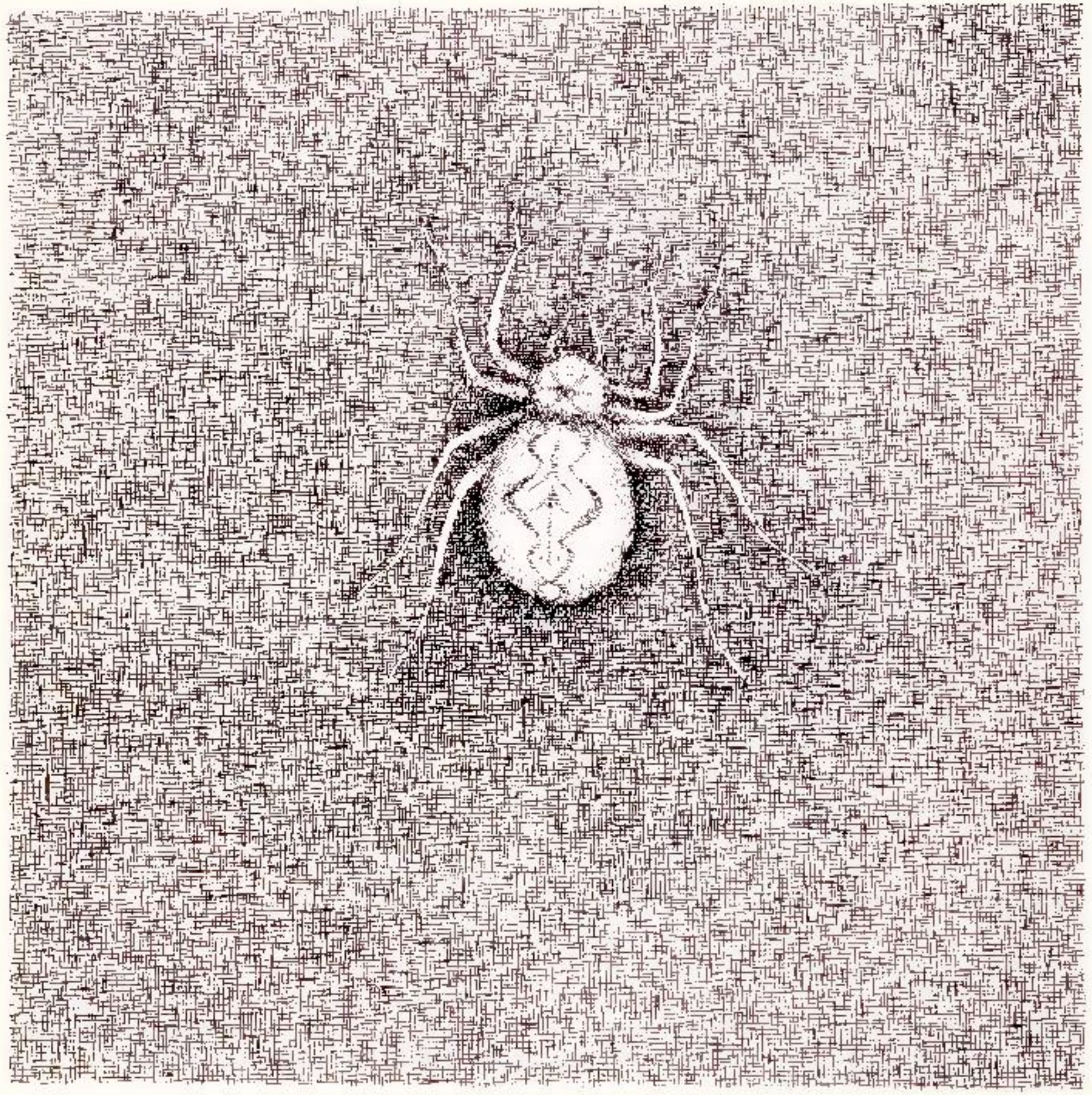
फिर पानी धीरे-धीरे फैलता रहा और फिर रुक गया।



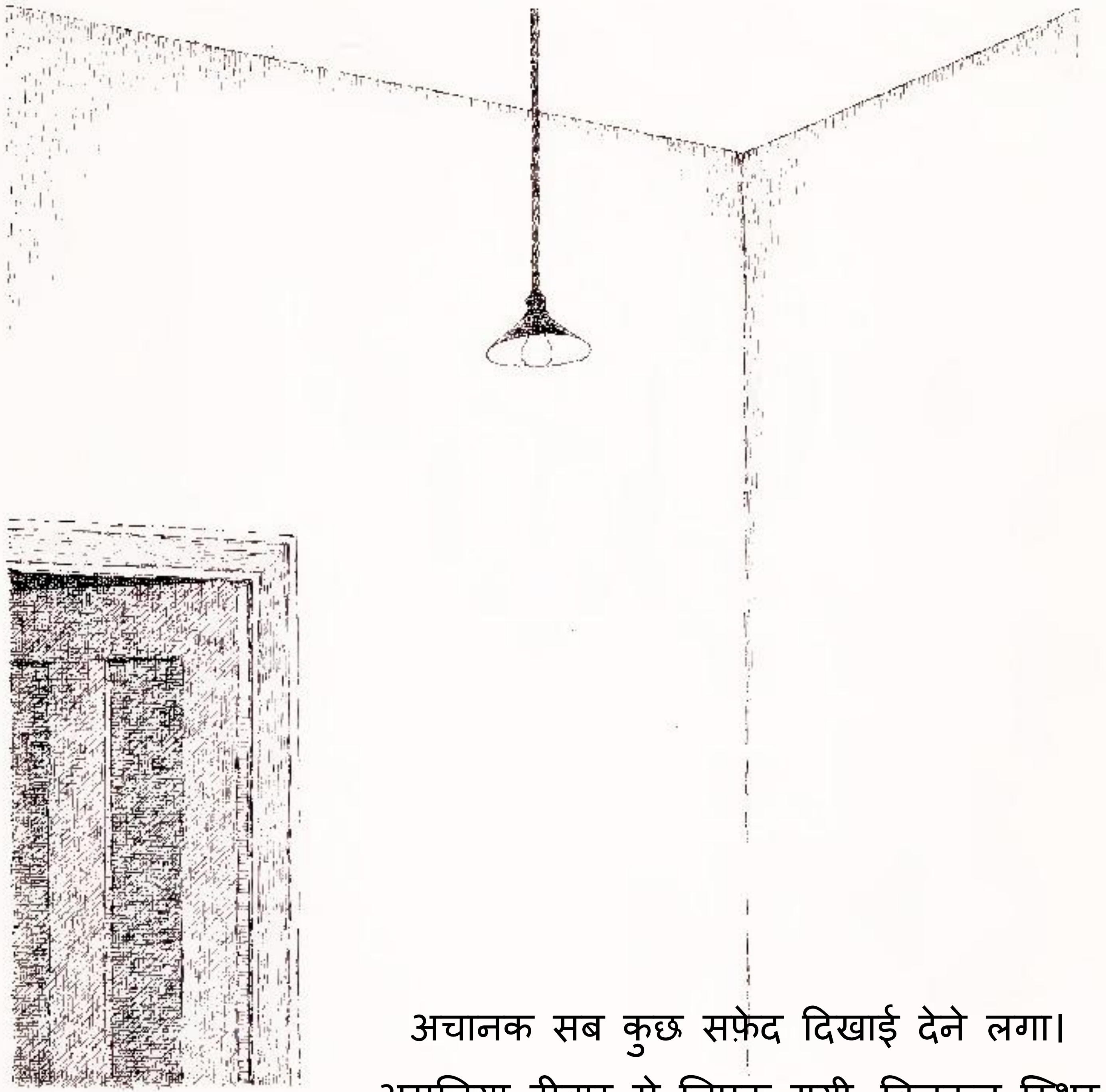
अरानिया घर की सीढ़ी पर पहुँच गई।

उसने थोड़ी देर आराम किया। ताकत आने पर वह ऊपर चढ़ी।

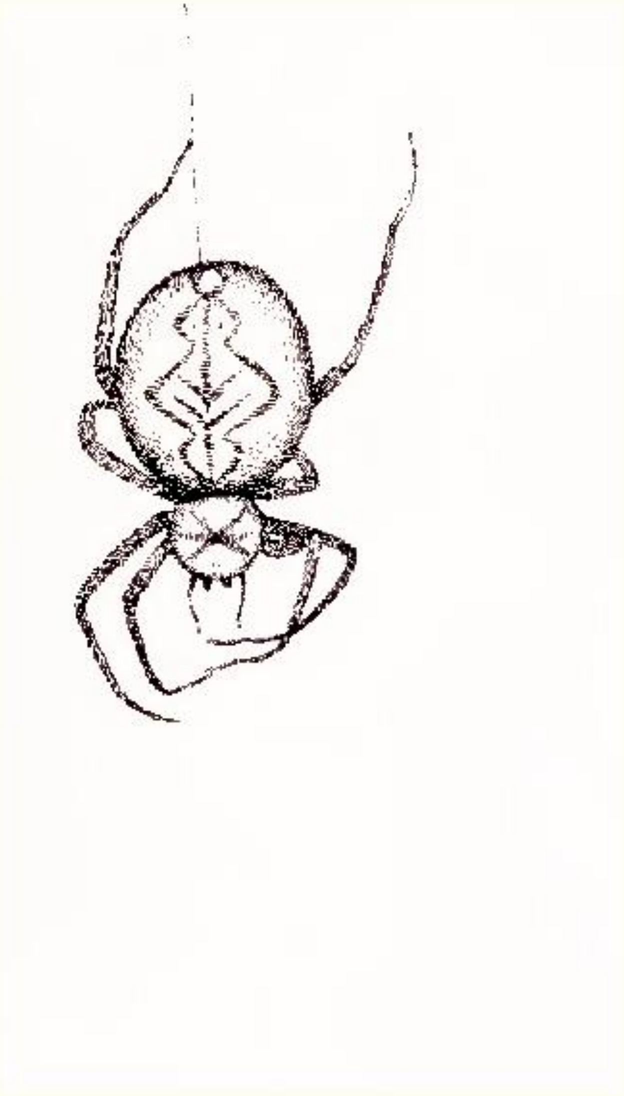
वह दरवाज़े की दरार से घर के अंदर घुसी।



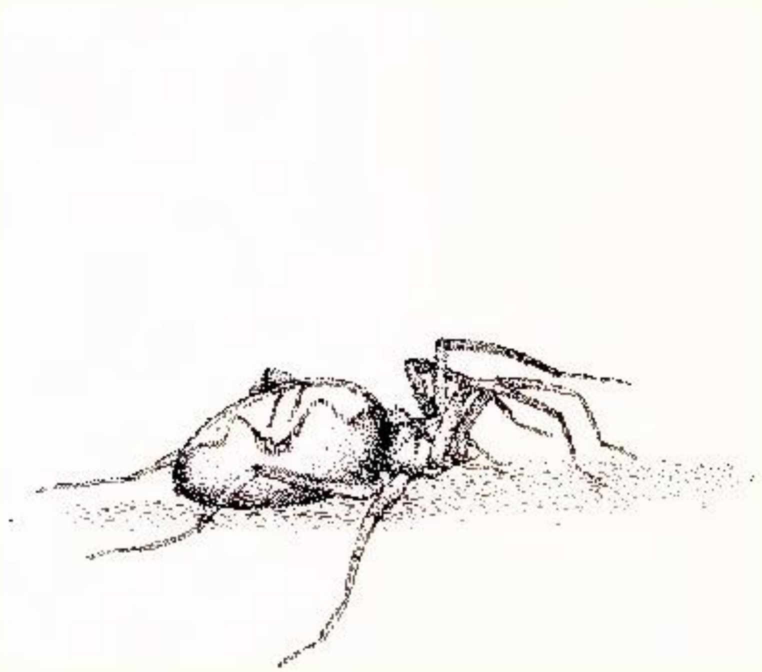
वह ऊपर चढ़ती गई और छिपने की जगह ढूँढने लगी।



अचानक सब कुछ सफ़ेद दिखाई देने लगा।
अरानिया दीवार से चिपक गयी, बिलकुल स्थिर
,बिना हिले-डुले। उसे कोई अंधकार का कोना नहीं
मिल रहा था, वहाँ बस सफ़ेद दीवारे थी।।

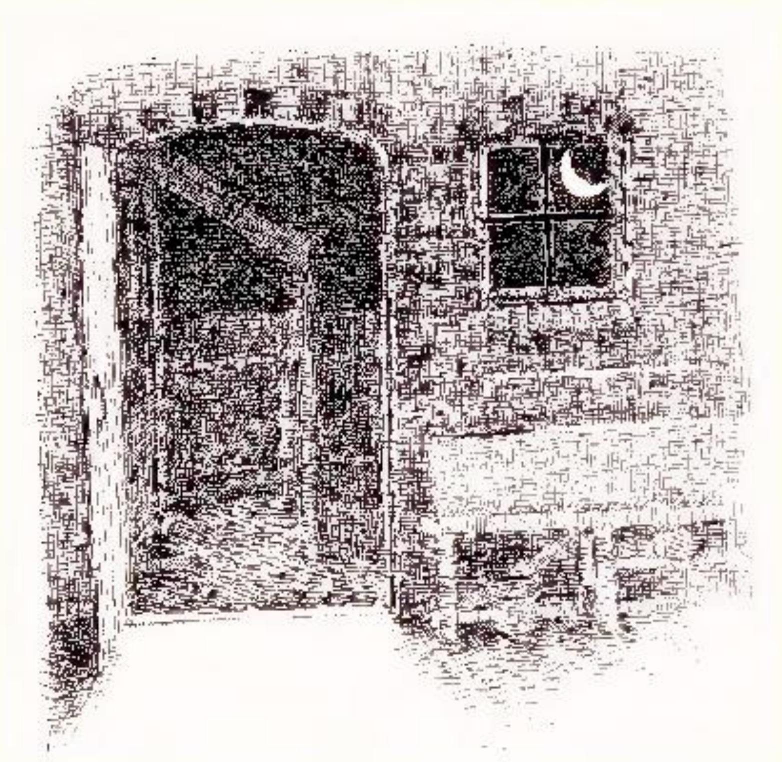


वह थोड़ी ऊपर चढ़ी, धागा बाँधा और नीचे उतर गई।



वह फर्श पर दौड़ी और छायाओं में चली गई।

फिर वह कपड़े धोने की जगह (लॉन्ड्री) में पहुँची।



वहाँ उसे एक सुरक्षित, अँधेरी जगह मिल गई।

वह पूरी रात और अगले दिन वहीं रुकी।

शाम होते ही वह फिर से बगीचे में चली गई।



उसने अपनी बोगनवेलिए की झाड़ी और अपना पत्ता ढूँढ लिया।

उसने पत्ते के किनारों को और मज़बूती से बंद किया और अंदर रेशम फैलाया।

फिर वह बाहर निकली और जाला बनाने लगी।

पहले बीच का क्रॉस, फिर ढांचा, फिर गोल-गोल चक्कर।

अंत में जाला पूरी तरह सही और सुंदर बन गया!

